संवाद

जेंडर संबंधी भेदभाव और इससे जुड़ी रूढ़िवादी मानसिकता एक जटिल चुनौती है। जेंडर समानता के क्षेत्र में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसे समाप्त करने के लिए यह ज़रूरी है कि बचपन से ही बच्चों को संवेदनशील बनाएँ। पढ़ना-पढ़ाना, सीखना-सिखाना कक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ना और समझना दोनों आवश्यक हैं। दूसरे शब्दों में पढ़ना ही समझना है। कई शिक्षकों का मानना है कि कक्षा में बच्चों द्वारा बोलकर पढ़ना, पढ़ना सिखाने के लिए बहुत ही उपयोगी तरीका है। इस तरीके से बच्चे देखकर, बोलकर और सुनकर पढ़ना सीखते हैं और उन्हें पढ़ना सीखने के सार्थक अवसर मिलते हैं।

गिजुभाई बधेका एक महान शिक्षाविद् थे। गिजुभाई बधेका ने 20वीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में शिक्षा के क्षेत्र में गुजरात में अनूठे प्रयोग किए। आज शिक्षा बाल-केंद्रित होने की ओर अग्रसर है। इस दिशा में गिजुभाई बधेका ने सालों पहले प्रयोग किए थे जो उनकी पुस्तक *दिवास्वप्न* में देखने को मिलते हैं। उनका बाल-साहित्य भी व्यापक था। बच्चों के प्रति उनकी समझ बेहद ही सराहनीय है। गिजुभाई बधेका मारिया मांटेसरी के कार्य से बहुत प्रभावित थे। बाल विकास और शिक्षा में उनकी काफ़ी रुचि थी। उन्होंने 1920 में भावनगर में बाल मंदिर पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की।

जन्म से आठ वर्ष तक की आयु की शिक्षा व देखभाल को प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है। आज इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष रूप से अपवंचित वर्ग के बच्चों के विकास के लिए प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा को व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास तथा प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के नामांकन और अवधारणा क्षमता में वृद्धि करने वाले महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया है।

प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण बाल विकास करना है। इसके लिए आवश्यक है कि बाल शिक्षा में सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास, शारीरिक विकास, मानसिक विकास, भाषा विकास इत्यादि के लिए अनुभव सम्मिलित हों। नाटक, कठपुतली के खेल, कहानियाँ, कविताएँ आदि न केवल भाषायी विकास करती हैं, बल्कि बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार भी करती हैं। आज

© NCERT not to be republished

शिक्षा के क्षेत्र में काफ़ी प्रयोग किए जा रहे हैं। बढ़ती तकनीकी सुविधाओं के साथ अब शिक्षा में भी संचार-साधनों का प्रयोग हो रहा है, जिससे न केवल सीखना आसान हो रहा है, बल्कि इससे शिक्षा अब किताबों, विद्यालयों और अध्यापकों तक ही सीमित नहीं रही है। इंटरनेट ने शिक्षा को विस्तार दिया है। डिजिटल इंडिया के तहत ई-पाठशाला, ई-बस्ता आदि पहल एक सकारात्मक पहलू है। इन्हीं सारे विषयों से संबंधित लेख प्रस्तुत प्रत्रिका में शामिल किए गए हैं। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

शुभकामनाओं सहित...

अकादमिक संपादक

© NCERT not to be republished